



Hargharpanditji

॥ श्री पुत्रदा एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री पुत्रदा एकादशी व्रत कथा ॥

श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पुत्रदा एकादशी भगवान श्रीहरि विष्णु को अत्यंत प्रिय है। इस एकादशी का वर्णन भविष्योत्तर पुराण में मिलता है। यह व्रत संतान-सुख, परिवार की उन्नति, वंश-वृद्धि तथा समस्त पापों के नाश के लिए अत्यंत शुभ माना गया है। वर्ष में दो पुत्रदा एकादशियाँ आती हैं—एक श्रावण शुक्ल पक्ष में और दूसरी पौष शुक्ल पक्ष में। यह कथा श्रावण शुक्ल पक्ष की पुत्रदा एकादशी की है।

श्री पुत्रदा एकादशी व्रत कथा

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे जनार्दन! श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? कृपया उसका माहात्म्य और व्रत कथा सुनाइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे राजन्! यह एकादशी 'पुत्रदा एकादशी' कहलाती है। इसका माहात्म्य अत्यंत महान है। अब इसकी पवित्र कथा सुनो।"

प्राचीन काल में महीष्मती नामक नगरी में महीजित नाम के एक धर्मात्मा और न्यायप्रिय राजा राज्य करते थे। उनके राज्य में सभी लोग सुखी थे। राजा प्रजा का पालन अपने पुत्र के समान करते थे, परंतु उनके जीवन में एक ही दुःख था—उनकी कोई संतान नहीं थी।

राजा और रानी संतान न होने के कारण अत्यंत दुःखी रहते थे। राजा को चिंता होती थी कि उनके बाद राज्य और वंश का क्या होगा। उन्होंने अनेक यज्ञ, दान, तप और धार्मिक अनुष्ठान किए, परंतु उन्हें संतान का सुख प्राप्त नहीं हुआ।

एक दिन राजा ने अपने मंत्रियों और ब्राह्मणों से कहा—

"मैंने कभी अधर्म नहीं किया, प्रजा पर अन्याय नहीं किया, फिर भी मुझे संतान-सुख क्यों नहीं मिला?"

राजा की पीड़ा देखकर मंत्री और ब्राह्मण वन में गए और महान तपस्वी महर्षि लोमश के आश्रम पहुँचे। उन्होंने महर्षि को प्रणाम कर राजा की समस्या बताई।

महर्षि लोमश ने ध्यान लगाकर राजा के पूर्वजन्म का कारण बताया।
उन्होंने कहा—

"पूर्वजन्म में राजा एक व्यापारी था। एक बार उसने अत्यंत प्यास से व्याकुल होकर एक तालाब से पानी पिया, जबकि उसी समय एक गाय अपने बछड़े सहित वहाँ पानी पी रही थी। व्यापारी ने उन्हें हटाकर पहले स्वयं पानी पी लिया। इसी कारण उसे इस जन्म में संतान-सुख से वंचित रहना पड़ा।"

फिर महर्षि ने कहा—

"यदि राजा और उनकी रानी श्रावण शुक्ल पक्ष की पुत्रदा एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत करें और उसका पुण्य भगवान विष्णु को समर्पित करें, तो उन्हें संतान का सुख अवश्य प्राप्त होगा।"

मंत्री लौटकर राजा को सारी बात बताने लगे। राजा महीजित और उनकी रानी ने पूरे राज्य के साथ श्रद्धा, भक्ति और नियमपूर्वक पुत्रदा एकादशी का व्रत किया। उन्होंने भगवान श्रीहरि विष्णु का पूजन किया, रात्रि-जागरण किया और द्वादशी के दिन विधिपूर्वक पारण किया। व्रत के पुण्य-प्रभाव से कुछ समय बाद रानी ने एक तेजस्वी, गुणवान और धर्मात्मा पुत्र को जन्म दिया। राजा का वंश आगे बढ़ा और राज्य में हर्ष का वातावरण छा गया।

तब भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे धर्मराज! जो श्रद्धा और नियमपूर्वक पुत्रदा एकादशी का व्रत करता है, उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं, परिवार में सुख-समृद्धि आती है और अंत में वह भगवान विष्णु के परम धाम को प्राप्त करता है।"

पुत्रदा एकादशी का महत्व

भगवान श्रीविष्णु और माता लक्ष्मी की विशेष पूजा का विधान है। संतान-सुख की कामना करने वाले दंपति इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करते हैं। यह व्रत परिवार की उन्नति, वंश-वृद्धि और मानसिक शांति का प्रतीक माना गया है।

इस दिन दान, जप, भजन और रात्रि-जागरण का विशेष महत्व है।

कथा का संदेश

कर्मों का फल अवश्य मिलता है, इसलिए सभी प्राणियों के प्रति दया और करुणा रखनी चाहिए।

भगवान विष्णु की भक्ति और एकादशी व्रत से कठिन से कठिन बाधाएँ भी दूर हो सकती हैं।

दान, सेवा, संयम और सदाचार जीवन को सफल बनाते हैं।

पुत्रदा एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु श्रावण शुक्ल पक्ष की पुत्रदा एकादशी का श्रद्धा और भक्ति से व्रत रखकर भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा करता है, उसे संतान-सुख (यदि उसके भाग्य और परिस्थितियों में संभव हो), परिवार की उन्नति, सुख-समृद्धि, पापों से मुक्ति तथा अंत में भगवान विष्णु के परम धाम वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ श्री पुत्रदा एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥